प्रगतिशील वसुधा

102
नवंबर 2024

प्रगतिशील लेखक संघ, मध्य प्रदेश का प्रकाशन

प्रगतिशील
वसुधा–102

नवंबर 2024

MPHIN/2005/14693
ISSN 2231-0460

संस्थापक सम्पादक
हरिशंकर परसाई
कमला प्रसाद

सम्पादक
विनीत तिवारी

सम्पादन सहयोग
सुधीर सजल

कार्यालय
प्रगतिशील वसुधा
102, चिनार अपार्टमेंट, 172, श्रीनगर एक्सटेंशन
इंदौर (मध्यप्रदेश) 452018
मोबाइल : 98931 92740
ईमेल : pwa.vasudha@gmail.com

यह अंक notnul.com पर भी उपलब्ध है।

प्रथम आवरण चित्र

आवरण पर चित्र प्रसिद्ध फ़िलिस्तीनी चित्रकार इस्माइल शम्मूट (1930-2006) का है। इस्मलाइल शम्मूट 1948 में गाज़ा शरणार्थी शिविर में रहने आ गए थे। जब इज़राएल ने फ़िलिस्तीन पर क़ब्ज़ा किया था। बाद में वे फ़िलिस्तीनी लिबरेशन ऑर्गेनाइज़ेशन (पीएलओ) के सदस्य हुए और 1965 में पीएलओ के आर्ट्स एण्ड नैशनल कल्चर विभाग के निदेशक और 1969 में यूनियन ऑफ़ अरब आर्टिस्ट्स के सेक्रेटरी जनरल बने।

पीछे का आवरण चित्र

पीछे का आवरण प्रो. जी.एन. साईंबाबा के इंटरनेट पर उपलब्ध चित्रों और साथ ही उनकी हाल में प्रकाशित पुस्तक "Why do you fear my way so much?" के मुखपृष्ठ के संयोजन से बनाया गया है।

अंदर के रेखांकन

अधिकांश रेखांकन पंकज दीक्षित के हैं तथा कुछ अन्य इंटरनेट से लिए गए हैं।

पृष्ठ सज्जा

वी.एम.ग्राफिक्स : नितिन पंजाबी (इंदौर)

nitinpunjabi5@gmail.com

मध्य प्रदेश के प्रगतिशील लेखक संघ के लिए संपादक, प्रकाशक, मुद्रक विनीत तिवारी, 102, चिनार अपार्टमेंट, 172, श्रीनगर एक्सटेंशन, इंदौर 452018 (मध्य प्रदेश) द्वारा गणेश ग्राफ़िक्स, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1, भोपाल से मुद्रित और प्रकाशित।

सहयोग राशि : यह अंक रुपये 300 मात्र

विदेश में 30 डॉलर (डाक व्यय अतिरिक्त)

वसुधा का एक बचत खाता इंडियन बैंक, बंगाली चौराहा ब्रांच, इंदौर में है।

खाता नाम : वसुधा (VASUDHA)

खाता क्रमांक : 20437443131

IFSC : IDIB000B604

राशि जमा करने के उपरांत कृपया पत्र एवं मोबाइल संदेश द्वारा अवश्य सूचित करें।

अनुक्रम

संपादकीय 5

वैचारिकी
दुनिया के बिना शब्द - एक भाषाविद् की बेचैन डायरी के पन्ने 12
गणेश देवी (अँग्रेज़ी से अनुवाद - ओम प्रकाश शर्मा)

स्मरण
ख़्वाजा अहमद अब्बास की नज़र से जवाहरलाल नेहरू 19
लिप्यंतरण - रेयाज़ अहमद

साक्षात्कार
श्याम बेनेगल का साक्षात्कारः परंजॉय गुहा ठाकुरता- लिप्यंतरण एवं अनुवादः शेखर मल्लिक 37

कहानियाँ
विष्णु नागर- मोहन जी सेकुलर 52
मनोज कुलकर्णी- गर्व 56
राजा सिंह- मूलधन 67
मौलश्री सक्सेना- अदृश्य दूरी 76

कविताएँ
असद ज़ैदी (84), मोहन कुमार डहेरिया (87), आरती (97),
कुमार विश्वबंधु (104), शंकरानंद (109), सुरेश शर्मा (116),
रूपम मिश्र (120), उर्मिल मोंगा (141), नीतिशा खल्खो (144),
पूजा यादव (147), पीयूष तिवारी (154)

साक्षात्कार
'लेखक को हमेशा विपक्ष में रहना चाहिए : मलय' 162
स्मृतिशेष वरिष्ठ कवि मलय का साक्षात्कार दिनेश भट्ट द्वारा

समकालीन परिदृश्य
शिक्षा के भगवाकरण का एजेंडा- पीटर रोनाल्ड डिसूजा, अनुवाद एवं संयोजन- संदीप कुमार 170
एक नये युद्ध विरोधी आंदोलन की ज़रूरत- अर्चिष्मान राजू 174

भाषांतर

यूसुफ़ शारोनी की मिस्री-अरबी कहानी- 'आपका आज्ञाकारी सेवक': अनुवाद- अर्जुमंद आरा 180
लातिनी अमेरिकी कविताएँ: अनुवाद - अरुण कमल 194
निकानोर पार्रा की लंबी कविता 'घोषणापत्र': अनुवाद- उज्ज्वल भट्टाचार्य 205
तस्लीमा नसरीन का लेख - 'स्त्रियों को आये, क्रोध आये' : अनुवाद- उत्पल बैनर्जी 210
गुरमीत कड़ियालवी की पंजाबी कहानी- 'वक़्त के पंखों से बँधी वफ़ा': अनुवाद- राजेंद्र तिवारी 215

फ़िलिस्तीन पर विशेष

अदनान कफ़ील दरवेश की कविताएँ 226
फ़िलिस्तीनी कवि मोसाब अबु तोहा की कविताएँ: अनुवाद - अनुराधा अनन्या 241
कुछ और फ़िलिस्तीनी कविताएँ : अनुवाद- जगदीश चंद्र 246

नस्लवाद - शुद्ध भारतीय धरोहर

कँवल धालीवाल (पंजाबी से अनुवादः डॉ. अंजू बासा) 253

नारी दासता का सच

डॉ. अस्मिता सिंह 279

स्मरण

रशीद जहाँ: परिवर्तन और प्रतिरोध की आधुनिक शुरुआत- अदिति भारद्वाज 292
विलक्षण फ़िल्मकार थीं छंदिता- मनमोहन चड्ढा 311

उपन्यास अंश

चरण सिंह पथिक के उपन्यास 'गुठली' का एक अंश 314

साहित्यिक विचार-विमर्श

काशीनाथ सिंह की कहानियों की रचना-प्रक्रिया : संजय कुमार सिंह 319

पुस्तक समीक्षा

कुमार अम्बुज का कविता संग्रह 'उपशीर्षक': शशिभूषण 324
लोकबाबू का उपन्यास 'बस्तर बस्तर' - बस्तर का कटु यथार्थ और कूट यथार्थ : डॉ. गोरेलाल चंदेल 332
अनिल करमेले का कविता संग्रह - 'बाक़ी बचे कुछ लोग' : कैलाश बनवासी 339

कला

मानवीय जिजीविषा के दस्तावेज़ हैं पंकज दीक्षित के रेखांकन- मुकेश बिजौले 348

चिंतन

जबलपुर के 18वें राष्ट्रीय सम्मेलन से उपजे कुछ विचार- सेवाराम त्रिपाठी 352

संपादकीय

आएगी आज़ादी
नदी से समंदर तक
और बदलेंगे मानचित्र

पाब्लो नेरुदा ने कहा था,

तुम पूछोगे कि क्यों नहीं करती उसकी कविता
मिट्टी, या पत्तियों, या
उसके देश के विशाल ज्वालामुखियों की बात
आओ, देखो सड़कों पर बह रहा है ख़ून
आओ, देखो सड़कों पर बह रहा है ख़ून
आओ, देखो सड़कों पर बह रहा है ख़ून

ज़ाहिर है उनकी मुराद कविता से यहाँ सिर्फ़ कविता ही नहीं, पूरे साहित्य और सभी कला-विधाओं से है। जब हमारे आस-पास सड़कों पर ख़ून बह रहा हो तो हमारी कविताओं, कहानियों और कला की अन्य विधाओं को अपने शब्दों को, अपने दृश्यों को, अपनी भंगिमाओं को पूरी ताक़त से उस यथार्थ को अभिव्यक्त करने और उस यथार्थ को अंततः बदल डालने की जनाकांक्षा में तब्दील करने की कोशिश करनी चाहिए।

दुनिया के बहुत सारे देशों में सड़कों पर ख़ून बह रहा है। विभाजन के बाद भी हमारे देश में अलग-अलग वक़्त पर कुछ सूबों में ऐसे हालात बने या बनाये गए जब वाक़ई सड़कों पर पहले ख़ून और फिर सन्नाटा मौजूद रहा। लेकिन हालात केवल तभी बुरे नहीं होते जब हमें सड़कों पर ख़ून बहता दिखायी देता है, बल्कि हालात तब भी ख़राब होते हैं जब ख़ून बेशक सड़कों पर न बह रहा हो, लेकिन रगों के भीतर सूख रहा हो। तो नेरुदा की कविता के हवाले से हम इंसानियत के हालात का जाइज़ा लेंगे, जहाँ रगों में ख़ून सूख रहा है वहाँ का भी और